हफ़्तावार रिसाला : 405
Weekly Booklet : 405

Madine Ki Ziyaratein

मदीने की ज़ियारतें

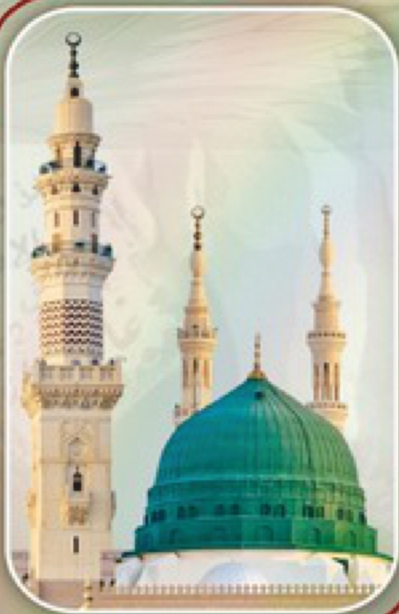

मदीनतुल मुनव्वरा के 12 नाम 02
मदीनए त़य्यिबा की तकालीफ़ पर सब्र की फ़ज़ीलत 09
मदीनतुल मुनव्वरा की 17 ख़ुसूसिय्यात 11
मस्जिदे नबवी शरीफ़ में नमाज़ के फ़ज़ाइल 15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**मदीने की ज़ियारतें**"

शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 E-mail : Tarajimindia@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

मदीने की ज़ियारतें[1]

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 15 सफ़हात का रिसाला : "**मदीने की ज़ियारतें**" पढ़ या सुन ले उसे मदीनए पाक की बा अदब ह़ाज़िरी नसीब फ़रमा और उस को मां बाप और ख़ानदान समेत बे ह़िसाब बख़्श दे । اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले । (الترغیب والترہیب، 2/328، حدیث:22)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मदीनतुल मुनव्वरा के फ़ज़ाइल

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ज़िक्रे मदीना आ़शिक़ाने रसूल के लिये बाइ़से राह़ते क़ल्बो सीना है । उ़श्शाक़े मदीना इस की फ़ुर्क़त में तड़पते और ज़ियारत के बेह़द मुश्ताक़ रहते हैं । दुन्या की जितनी ज़बानों में जिस क़दर क़सीदे मदीनतुल मुनव्वरा के हिज्रो फ़िराक़ और इस के दीदार की तमन्ना में पढ़े गए या पढ़े जाते हैं उतने दुन्या के किसी और शहर या ख़ित्ते के लिये नहीं पढ़े गए और नहीं पढ़े जाते, जिसे एक बार भी मदीने का दीदार हो जाता है वोह अपने आप को बख़्त बेदार समझता और मदीने में गुज़रे हुए ह़सीन

1... येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब "आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात" सफ़ह़ा 247 ता 266 से लिया गया है ।

लम्हात को हमेशा के लिये यादगार क़रार देता है। किसी आ़शिक़े रसूल ने क्या ख़ूब कहा है !

वोही साअ़तें थीं सुरूर की, वोही दिन थे ह़ासिले ज़िन्दगी
ब हुज़ूरे शाफ़ेए़ उम्मतां मेरी जिन दिनों त़लबी रही

मदीनतुल मुनव्वरा की ज़ियारात की तफ़्सीलात से क़ब्ल दियारे ह़बीब के कुछ फ़ज़ाइल मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये ताकि दिल में मदीने की मह़ब्बत व लगन मज़ीद मौजज़न हो :

क़ुरआने पाक में ज़िक्रे मदीना

क़ुरआने करीम में मुतअ़द्दिद मक़ामात पर **ज़िक्रे मदीना** किया गया है मसलन पारह 28 **सूरतुल मुनाफ़िक़ून** आयत नम्बर 8 में है :

يَقُوْلُوْنَ لَىٕنْ رَّجَعْنَاۤ اِلَى الْمَدِیْنَةِ لَیُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَ لِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ وَ لٰكِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ۠ ﴿۸﴾

(پ28،المنافقون:8)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कहते हैं हम मदीना फिर कर गए तो ज़रूर जो बड़ी इ़ज़्ज़त वाला है वोह उस में से निकाल देगा उसे जो निहायत ज़िल्लत वाला है" और इ़ज़्ज़त तो **अल्लाह** और उस के रसूल और मुसलमानों ही के लिये है मगर मुनाफ़िक़ों को ख़बर नहीं।

"मदीनतुल मुनव्वरा" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से मदीने के 12 नाम

उ़लमाए किराम ने मदीनतुल मुनव्वरा के कमो बेश 100 नाम लिखे हैं और दुन्या के किसी भी शहर के इतने नाम नहीं। हुसूले बरकत के लिये यहां सिर्फ़ 12 मुबारक नाम पेश किये जाते हैं : ﴾1﴿ मदीना ﴾2﴿

मदीनतुर्रसूल ﴾3﴿ तृय्यिबा ﴾4﴿ दारुल अबरार ﴾5﴿ ताबा ﴾6﴿ मुबारका ﴾7﴿ नाजिया ﴾8﴿ आसिमा ﴾9﴿ शाफ़िया ﴾10﴿ ह़सना ﴾11﴿ जज़ीरतुल अ़रब ﴾12﴿ सय्यिदतुल बुलदान ।

नामे मदीना ले दिया चलने लगी नसीमे ख़ुल्द

सोज़िशे ग़म को हम ने भी कैसी हवा बताई क्यूं

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 96)

मदीनतुल मुनव्वरा में मरने की फ़ज़ीलत

दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : "तुम में से जो मदीने में मरने की इस्तिताअ़त रखे वोह मदीने ही में मरे क्यूं कि जो मदीने में मरेगा मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा और उस के ह़क़ में गवाही दूंगा ।" (شعب الایمان، 3/497، حدیث:1482)

ज़मीं थोड़ी सी दे दे बहरे मदफ़न अपने कूचे में

लगा दे मेरे प्यारे मेरी मिट्टी भी ठिकाने से

(ज़ौके़ ना'त, स. 215)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दज्जाल मदीनतुल मुनव्वरा में दाख़िल नहीं हो सकता

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ख़ुश गवार है : عَلٰى اَنْقَابِ الْمَدِيْنَةِ مَلَائِكَةٌ لَّا يَدْخُلُهَا الطَّاعُوْنُ وَلَا الدَّجَّالُ ।
तरजमा : मदीने में दाख़िल होने के तमाम रास्तों पर फ़िरिश्ते हैं, इस में ताऊ़न और **दज्जाल** दाख़िल न होंगे । (بخاری، 1/619، حدیث:1880)

मदीनतुल मुनव्वरा हर आफ़त से मह़फ़ूज़

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "उस

ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! मदीने में न कोई घाटी है न कोई रास्ता मगर इस पर दो फ़िरिश्ते हैं जो इस की हिफ़ाज़त कर रहे हैं ।" (مسلم، ص714، حدیث:1374)

इमाम नववी (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه) फ़रमाते हैं : इस रिवायत में **मदीनतुल मुनव्वरा** की फ़ज़ीलत का बयान है और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में उस की हिफ़ाज़त की जाती थी, कसरत से फ़िरिश्ते हिफ़ाज़त करते और उन्हों ने तमाम घाटियों को सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई के लिये घेरा हुवा है । (شرح صحیح مسلم للنووی، 5/148)

मलाइक लगाते हैं आंखों में अपनी शबो रोज़ ख़ाके मज़ारे मदीना

(ज़ौक़े ना'त, स. 212)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मदीने के ताज़ा फल

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि लोग जब मौसिम का पहला **फल** देखते, उसे हुज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा रह़मत में ह़ाज़िर लाते, सरकारे नामदार (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उसे ले कर इस त़रह़ दुआ़ करते : इलाही ! तू हमारे लिये हमारे फलों में बरकत दे और हमारे लिये हमारे मदीने में बरकत कर और हमारे साअ़ व मुद (येह पैमानों के नाम हैं इन) में बरकत कर, **या अल्लाह !** (पाक) बेशक इब्राहीम तेरे बन्दे और तेरे ख़लील और तेरे नबी हैं और बेशक मैं तेरा बन्दा और तेरा नबी हूं । उन्हों ने मक्के के लिये तुझ से दुआ़ की और मैं मदीने के लिये तुझ से दुआ़ करता हूं, उसी की मिस्ल जिस की दुआ़ मक्के के लिये उन्हों ने की और उतनी ही और (या'नी मदीने की बरकतें मक्के से दुगनी हों) । फिर जो

छोटा बच्चा सामने होता उसे बुला कर वोह फल अ़ता फ़रमा देते।

(مسلم،ص713،حدیث:1373)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम ! हैं सख़ी के माल में ह़क़दार हम

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 83)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मदीना लोगों को पाक व साफ़ करेगा

मदीने के सुल्तान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लिशान है : "मुझे एक ऐसी बस्ती की त़रफ़ (हिजरत) का हुक्म हुवा जो तमाम बस्तियों को खा जाएगी (सब पर ग़ालिब आएगी) लोग उसे "यसरिब" कहते हैं और वोह **मदीना** है, (येह बस्ती) लोगों को इस त़रह़ पाक व साफ़ करेगी जैसे भट्टी लोहे के मैल को।" (بخاری،1/617،حدیث:1871)

मदीने को यसरिब कहना गुनाह है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में **मदीनतुल मुनव्वरा** को "यसरिब" कहने की मुमानअ़त की गई है। फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 116 पर है : मदीनए त़य्यिबा को यसरिब कहना ना जाइज़ व मम्नूअ़ व गुनाह है और कहने वाला गुनहगार। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो मदीना को यसरिब कहे उस पर तौबा वाजिब है, मदीना त़ाबा है मदीना त़ाबा है।

अ़ल्लामा मनावी "तैसीर शर्हे जामेए़ सग़ीर" में फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि मदीनए त़य्यिबा का "यसरिब" नाम रखना ह़राम है कि **यसरिब** कहने से तौबा का हुक्म फ़रमाया और तौबा गुनाह ही से होती है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/116)

यसरिब कहना क्यूं मन्अ़ है ?

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़्हा 119 पर है : शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه "अशिअ़तुल्लमआ़त शर्हुल मिश्कात" में फ़रमाते हैं : आंह़ज़रत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वहां लोगों के रहने सहने और जम्अ़ होने और उस शहर से मह़ब्बत की वज्ह से उस का नाम "मदीना" रखा और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे यसरिब कहने से मन्अ़ फ़रमाया इस लिये कि येह ज़मानए जाहिलिय्यत का नाम है या इस लिये कि येह "सर्ब" से बना है जिस के मा'ना हलाकत और फ़साद है और तसरीब मा'ना सरज़निश और मलामत है या इस वज्ह से कि यसरिब किसी बुत या किसी जाबिर व सरकश बन्दे का नाम था। इमाम बुख़ारी (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) अपनी तारीख़ में एक ह़दीस लाए हैं कि जो कोई एक मरतबा "यसरिब" कह दे तो उसे (कफ़्फ़ारे में) दस मरतबा "मदीना" कहना चाहिये। कुरआने मजीद में जो "يَاَهْلَ يَثْرِبَ" (या'नी ऐ यसरिब वालो !) आया है। वोह दर अस्ल मुनाफ़िक़ीन का क़ौल (या'नी कही हुई बात) है कि यसरिब कह कर वोह मदीनतुल मुनव्वरा की तौहीन का इराद रखते थे। एक दूसरी रिवायत में है कि यसरिब कहने वाला **अल्लाह** पाक से इस्तिग़्फ़ार (या'नी तौबा) करे और मुआ़फ़ी मांगे। और बा'ज़ ने फ़रमाया है कि मदीनतुल मुनव्वरा को जो यसरिब कहे उस को सज़ा देनी चाहिये। ह़ैरत की बात है कि बा'ज़ बड़े लोगों की ज़बान से अश्आ़र में लफ़्ज़ "यसरिब" सादिर हुवा है और अल्लाह पाक ख़ूब जानता है और अ़ज़मतो शान वाले का इल्म बिल्कुल पुख़्ता और हर त़रह़ से मुकम्मल है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !　　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मदीने की सख़्तियों पर सब्र करने वाले के लिये शफ़ाअ़त की बिशारत

शहनशाहे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : मेरा कोई उम्मती मदीने की तकलीफ़ और सख़्ती पर सब्र न करेगा मगर मैं क़ियामत के दिन उस का शफ़ीअ़ (या'नी शफ़ाअ़त करने वाला) होऊंगा।

(مسلم، ص716، حدیث:1378)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : (या'नी) शफ़ाअ़ते ख़ुसूसी। ह़क़ येह है कि येह **वा'दा** सारी उम्मत के लिये है कि **मदीने** में मरने वाले हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस शफ़ाअ़त के मुस्तह़िक़ हैं।

त़यबा में मर के ठन्डे चले जाओ आंखें बंद
सीधी सड़क येह शहरे शफ़ाअ़त नगर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 222)

ख़याल रहे कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिजरत से पहले मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में रहना बेहतर था और हिजरत के बा'द फ़त्ह़े मक्का से पहले मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में रहना मुसल्मान को मन्अ़ हो गया, हिजरत वाजिब हो गई और फ़त्ह़े मक्का के बा'द वहां रहना तो जाइज़ हुवा, मगर मदीनए मुनव्वरा में रहना अफ़्ज़ल क़रार पाया कि यहां हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़ुर्ब है, इसी लिये ज़ियादा तर फ़ज़ाइल मदीनए पाक में रहने के आए हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 4/210)

मदीना इस लिये अ़त्तार जानो दिल से है प्यारा   के रहते हैं मेरे आक़ा मेरे सरवर मदीने में

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मदीनतुल मुनव्वरा बेहतर है

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "अहले मदीना पर एक ज़माना ऐसा ज़रूर आएगा कि लोग ख़ुशहाली की तलाश में यहां से चरागाहों की त़रफ़ निकल जाएंगे, फिर जब वोह ख़ुशहाली पा लेंगे तो लौट कर आएंगे और अहले मदीना को उस कुशादगी की त़रफ़ जाने पर आमादा करेंगे ह़ालांकि अगर वोह जान लें तो मदीना उन के लिये बेहतर है।" (مسند امام احمد، 5/106، حدیث:14686)

उन के दर की भीक छोड़ें सरवरी के वासित़े
उन के दर की भीक अच्छी, सरवरी अच्छी नहीं

(ज़ौक़े ना'त, स. 185)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मदीनतुल मुनव्वरा की तंगदस्ती पर सब्र करने वाले के लिये शफ़ाअ़त की बिशारत

मुसल्मानो के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मदीने में चीज़ों के निर्ख़ (या'नी भाव) बढ़ गए और ह़ालात सख़्त हो गए तो सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सब्र करो और ख़ुश हो जाओ कि मैं ने तुम्हारे साअ़ और मुद को बा बरकत कर दिया और इकट्ठे हो कर खाया करो क्यूं कि एक का खाना दो को और दो का खाना चार को और चार का खाना पांच और छे को किफ़ायत करता है और बेशक बरकत जमाअ़त में है तो जिस ने मदीने की तंगदस्ती और सख़्ती पर सब्र किया मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा या उस के ह़क़ में गवाही दूंगा और जो इस के ह़ालात से मुंह फेर कर मदीने से निकला **अल्लाह** पाक

उस से बेहतर लोगों को इस में बसा देगा और जिस ने **अहले मदीना** से बुराई करने का इरादा किया **अल्लाह** पाक उसे इस त़रह़ पिघला देगा जैसे नमक पानी में पिघल जाता है । (مجمع الزوائد،3/657،حدیث:5819)

शहे कौनैन ने जब सदक़ा बांटा ज़माने भर को दम में कर दिया ख़ुश

(ज़ौक़े ना'त, स. 139)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मदीनए त़य्यिबा की तकालीफ़ पर सब्र की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 243 सफ़ह़ात की किताब "**बिहिश्त की कुन्जियां**" सफ़्ह़ा 116 पर है : रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स बिल क़स्द (या'नी इरादतन) मेरी ज़ियारत को आया वोह क़ियामत के दिन मेरी मुह़ाफ़ज़त (या'नी ह़िफ़ाज़त) में रहेगा और जो शख़्स मदीने में सुकूनत (या'नी रिहाइश इख़्तियार) करेगा और मदीने की तकालीफ़ पर सब्र करेगा तो मैं क़ियामत के दिन उस की गवाही दूंगा और उस की शफ़ाअ़त करूंगा और जो शख़्स ह़रमैन (या'नी मक्के मदीने) में से किसी एक में मरेगा **अल्लाह** पाक उस को इस ह़ाल में क़ब्र से उठाएगा कि वोह क़ियामत के ख़ौफ़ से अम्न में रहेगा । (مشکاۃ المصابیح،1/512،حدیث:2755)

मदीने में रिहाइश इख़्तियार करना कैसा ?

याद रहे ! मदीनतुल मुनव्वरा में सिर्फ़ उसी को क़ियाम की इजाज़त है जो यहां का एह़तिराम बर क़रार रख सकता हो, जो ऐसा नहीं कर सकता उस के लिये यहां मुस्तक़िल या ज़ियादा अ़र्से रिहाइश की मुमानअ़त है चुनान्चे **फ़तावा रज़विय्या** मुख़र्रजा जिल्द 10 सफ़्ह़ा 695 पर है : (साह़िबे फ़त्हुल क़दीर फ़रमाते हैं) मैं कहता हूं : क्यूं कि मदीनए त़य्यिबा में

रह़मत अक्सर, लुत़्फ़ वाफ़िर, करम सब से वसीअ़ और अ़फ़्व (या'नी मुआ़फ़ी मिलना) सब से जल्दी होता है जैसा कि शाहिदे मुजर्रब (या'नी तजरिबे से साबित) है وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ इस के बा वुजूद उक्ताने का डर और वहां के एह़तिरामो तौक़ीर में क़िल्लते अदब का ख़ौफ़ तो मौजूद है और येह भी तो मुजावरत से मानेअ़ (या'नी मुस्तक़िल रिहाइश से रुकावट) है, हां वोह अफ़राद जो फ़िरिश्ता सिफ़त हों तो उन का वहां ठहरना और (त़वील रिहाइश इख़्तियार कर के) फ़ौत होना सआ़दते कामिला है।

मदीने में इस्तिन्जा करने के मुतअ़ल्लिक़ वाक़िआ़

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 10 सफ़ह़ा 689 पर "अल मदख़ल" के ह़वाले से वाक़िआ़ लिखते हैं : "अस्सय्यिदुल जलील अबू अ़ब्दुल्लाह अल क़ाज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के बारे में बयान किया गया कि उन्हें शहरे मदीना में रफ़्ए़ ह़ाजत की ज़रूरत पेश आई तो वोह शहर में एक मक़ाम की त़रफ़ गए और वहां क़ज़ाए ह़ाजत का इरादा किया तो ग़ैब से आवाज़ आई जो इस अ़मल से उन्हें मन्अ़ कर रही थी, तो उन्हों ने कहा : "तमाम हुज्जाज ऐसा करते हैं," तो जवाब में तीन दफ़्आ़ आवाज़ आई : कहां के हुज्जाज ? कहां के हुज्जाज ? कहां के हुज्जाज ? फिर वोह शहर से बाहर चले गए और रफ़्ए़ ह़ाजत (या'नी पेशाब वग़ैरा) की और फिर लौटे।

मदीने का अस्ल क़ियाम आक़ा के अह़काम पर अ़मल करना है

आगे चल कर "साहि़बे मदख़ल" के ह़वाले से मज़ीद तह़रीर है : हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुजावरत आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अवामिर की इत्तिबाअ़ (या'नी अह़कामात की बजा आवरी) और नवाही से इज्तिनाब (या'नी जिन बातों से मन्अ़ फ़रमाया उन से बचने) की सूरत में है ख़्वाह इन्सान

किसी जगह मुक़ीम हो, और अस्लन (ह़क़ीक़तन) मुजावरत येही है।

(फ़तावा रज़विय्या 10/689)

ग़मे मुस्त़फ़ा जिस के सीने में है   कहीं भी रहे वोह मदीने में है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

“प्यारा प्यारा है मदीना” के सतरह हुरूफ़ की निस्बत से मदीनतुल मुनव्वरा की 17 ख़ुसूसिय्यात

(यूं तो मदीने में बे शुमार ख़ूबियां हैं मगर हुसूले बरकत के लिये यहां सिर्फ़ 17 बयान की हैं)

❀ रूए ज़मीन का कोई ऐसा शहर नहीं जिस के अस्माए गिरामी या'नी मुबारक नाम इतनी कसरत को पहुंचे हों जितने मदीनतुल मुनव्वरा के नाम हैं, बा'ज़ उ़लमा ने 100 तक नाम तह़रीर किये हैं ❀ मदीनतुल मुनव्वरा ऐसा शहर है जिस की मह़ब्बत और हिज्रो फ़ुर्क़त (या'नी जुदाई) में दुन्या के अन्दर सब से ज़ियादा ज़बानों और सब से ज़ियादा ता'दाद में क़सीदे लिखे गए, लिखे जा रहे हैं और लिखे जाते रहेंगे ❀ **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस की त़रफ़ हिजरत की और यहीं क़ियाम पज़ीर रहे ❀ **अल्लाह** पाक ने इस का नाम त़ाबा रखा ❀ मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो मदीनतुल मुनव्वरा के क़रीब पहुंच कर ज़ियादतिये शौक़ से अपनी सुवारी तेज़ कर देते ❀ मदीनतुल मुनव्वरा में आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ल्बे मुबारक सुकून पाता ❀ यहां का गर्दो ग़ुबार अपने चेहरए अन्वर से साफ़ न फ़रमाते और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को भी इस से मन्अ़ फ़रमाते और इर्शाद फ़रमाते कि **ख़ाके मदीना में शिफ़ा** है। (جذب القلوب، ص22) ह़ज़रते सा'द बिन

अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है कि जब **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक से वापस तशरीफ़ ला रहे थे तो तबूक में शामिल होने से रह जाने वाले कुछ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मिले। उन्हों ने गर्द उड़ाई, एक शख़्स ने अपनी नाक ढांप ली आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की नाक से कपड़ा हटाया और इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! "मदीने की ख़ाक में हर बीमारी से शिफ़ा है।" (جامع الاصول للجزری، 9/297، حدیث:6962) ❀ जब कोई मुसल्मान ज़ियारत की निय्यत से मदीनतुल मुनव्वरा आता है तो फ़िरिश्ते रह़मत के तोहफ़ों से उस का इस्तिक़्बाल करते हैं। الخ। (جذب القلوب، ص211) ❀ सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा में मरने की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई ❀ यहां मरने वाले की सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे ❀ जो वुज़ू कर के आए और मस्जिदे नबवी शरीफ़ में नमाज़ अदा करे उसे ह़ज का सवाब मिलता है ❀ ह़ुजरए मुबारका और मिम्बरे मुनव्वर के दरमियान की जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ (जन्नत की क्यारी) है ❀ मस्जिदे नबवी शरीफ़ में एक नमाज़ पढ़ना पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर है। (ابن ماجہ، 2/176، حدیث:1413) ❀ मदीनए मुनव्वरा की सर ज़मीन पर मज़ारे मुस्त़फ़ा है जहां सुब्ह़ो शाम सत्तर सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते हैं ❀ यहां की ज़मीन का वोह मुबारक ह़िस्सा जिस पर रसूले अन्वर, صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जिस्मे मुनव्वर तशरीफ़ फ़रमा है वोह हर मक़ाम ह़त्ता कि ख़ानए का'बा, बैतुल मा'मूर, अ़र्शो कुर्सी और जन्नत से भी अफ़्ज़ल है। ❀ दज्जाल मदीनतुल मुनव्वरा में दाख़िल नहीं हो सकेगा ❀ अहले मदीना से बुराई का इरादा करने वाला अ़ज़ाब में

गिरिफ़्तार होगा ❀ यहां का क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ दुन्या के तमाम क़ब्रिस्तानों से अफ़्ज़ल है, यहां तक़रीबन 10 हज़ार सहाबए किराम व अजिल्लए अहले बैते अत्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और बे शुमार ताबेईने किराम व औलियाए इज़ाम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم और दीगर ख़ुश नसीब मुसलमान मदफ़ून हैं।

रहें उन के जल्वे बसें उन के जल्वे मेरा दिल बने यादगारे मदीना

(ज़ौक़े ना'त, स. 213)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मस्जिदे नबवी शरीफ़ की अराज़ी का हुसूल

मस्जिदे नबवी शरीफ़ की अराज़ी (या'नी ज़मीन) दो यतीम बच्चों सहल और सुहैल (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا) की मिल्किय्यत थी, यहां मुशरिकीन की क़ब्रें थीं, ज़मीन ना हमवार थी, येह दोनों बच्चे ह़ज़रते असअ़द बिन ज़ुरारा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के ज़ेरे कफ़ालत (ज़िम्मेदारी) थे। इस ज़मीन पर खजूरें ख़ुश्क की जाती थीं। हुज़ूर सय्यिदे **आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बच्चों से फ़रमाया : येह क़त्अ़ए अराज़ी (या'नी PLOT) हमें फ़रोख़्त कर दो ताकि यहां मस्जिद ता'मीर की जा सके। बच्चों ने बसद अदबो नियाज़ अ़र्ज़ की : आक़ा ! येह अराज़ी हमारी त़रफ़ से बत़ौरे नज़राना क़बूल फ़रमाइये तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की इस पेशकश को शरफ़े क़बूलिय्यत से न नवाज़ा। बिल आख़िर क़ीमत अदा कर के येह ज़मीन ख़रीद ली गई। मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा, आ़शिक़े अक्बर, सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने 10 हज़ार दीनार अदा किये। (مدینۃ الرسول، ص130) दूसरी रिवायत में है कि येह जगह बनू नज्जार की थी। सरकारे दो जहान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से येह जगह क़ीमतन फ़रमाई तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम इस की क़ीमत (या'नी

अज्र) **अल्लाह** पाक से लेंगे। (वफ़ाउल वफ़ा 1/323) अराज़ी का रक़्बा तक़रीबन 100 मुरब्बअ़ गज़ था।

बारगाहे रिसालत में जिब्रईले अमीन की हाज़िरी

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से रिवायत है, जब हुज़ूरे अन्वर, मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ की ता'मीर का इरादा फ़रमाया तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस की ऊंचाई सात हाथ (या'नी तक़रीबन साढ़े तीन गज़) रखिये, इस की तज़ईन (या'नी ज़ेबो ज़ीनत) में तकल्लुफ़ न हो। (वफ़ाउल वफ़ा 1/336) उस वक़्त ता'मीरात का येही अन्दाज़ था, मस्जिद में त़ाक़ नुमा मेह़राब, गुम्बद और मनारा वग़ैरा न होता। तब्दीलिये ह़ालात के सबब अब आ़लीशान मस्जिदें बनाने की इजाज़त है। फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ जिल्द 8, सफ़ह़ा 106 पर "दुर्रे मुख़्तार" के ह़वाले से दिये हुए एक जुज़इये का ह़िस्सा है : (मेह़राब के इलावा (मस्जिद के दीगर ह़िस्से) मुनक़्क़श करने में कोई ह़रज नहीं) क्यूंकि मेह़राब का नक़्शो निगार नमाज़ी को मश्ग़ूल (ग़ाफ़िल) कर देता है, अलबत्ता बहुत ज़ियादा नक़्शो निगार के लिये तकल्लुफ़ करना ख़ुसूसन दीवारे क़िब्ला में मकरूह है।

मस्जिदे नबवी शरीफ़ की ता'मीर

इस क़त्अ़ए अराज़ी (PLOT) से खजूरों के दरख़्त कटवा दिये गए, (रबीउ़ल अव्वल 1 हि. मुत़ाबिक़ अक्तूबर 622 ई. में मस्जिदे नबवी शरीफ़ का संगे बुन्याद रखा गया।) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم के साथ ख़ुद हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ईंटें उठा उठा कर लाते और अपनी ज़बाने फ़ैज़ तर्जुमान से येह भी फ़रमाते : اَللّٰهُمَّ اِنَّ الْاَجْرَ اَجْرُ الْاٰخِرَة فَارْحَمِ الْاَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَة ऐ रब्बे क़ुद्दूस !

आख़िरत का बदला ही बेहतर है तू अन्सार और मुहाजिरीन पर रह़्म फ़रमा। (वफ़ाउल वफ़ा, 1/326 ता 328)

ता'मीरे मस्जिदे नबवी में आक़ा ने शिर्कत फ़रमाई

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : मदीने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ईंटें उठा कर ला रहे थे, येह देख कर मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** येह ईंटें मुझे दे दीजिये मैं ले जाता हूं। फ़रमाया : और काफ़ी ईंटें रखी हैं, उठा लाओ ! येह मैं ले जा रहा हूं। (مسند امام احمد، 3/323، حدیث:8960) मस्जिदे नबवी शरीफ़ की कच्ची ईंटों से ता'मीर की गई और उस की छत खजूर की शाख़ों से थी और उस के सुतून खजूर के तने थे। (वफ़ाउल वफ़ा, 1/327)

तेरी सादगी पे लाखों तेरी आ़जिज़ी पे लाखों हों सलामे आ़जिज़ाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 285)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मस्जिदे नबवी शरीफ़ में नमाज़ के फ़ज़ाइल

तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ﴾1﴿ जिस ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ में चालीस नमाज़ें मुतवातिर अदा कीं उस के लिये जहन्नम और निफ़ाक़ से नजात लिख दी जाती है। (مسند امام احمد، 4/311، حدیث:12584) ﴾2﴿ जो पाक व साफ़ हो कर सिर्फ़ मेरी मस्जिद में नमाज़ की अदाएगी के इरादे से निकला यहां तक कि उस में नमाज़ अदा की तो उस का सवाब **ह़ज** के बराबर है। (شعب الایمان، 3/499، حدیث:4191) ﴾3﴿ मेरी इस मस्जिद की एक नमाज़ पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर है। (ابن ماجہ، 2/176، حدیث:1413)

सद ग़ैरते फ़िरदौस मदीने की ज़मीं है बाइ़स है येही इस का कि तू इस में मकीं है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ह़फ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه / ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत अल ह़ाज अबू उसैद उ़बैद रज़ा मदनी مُدَّظِلُّهُ الْعَالِی की जानिब से हर हफ़्ते एक रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है। مَاشَآءَ اللّٰه الْکَرِیْم ! लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें येह रिसाला पढ़ या सुन कर अमीरे अहले सुन्नत/ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत की दुआ़ओं से ह़िस्सा पाते हैं। येह रिसाला pdf में दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislamiindia.org से फ़्री डाउनलोड किया जा सकता है। सवाब की निय्यत से खु़द भी पढ़ें और अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें।

(शो'बा : हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़)

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025